हिन्दी साहित्य - B.A. VIth Sem.
द्वितीय प्रश्न पत्र

'उत्तराखण्ड का हिन्दी साहित्य'

सति सती
रचनाकार → श्रीमती तारा पाण्डे

सती कविता का प्रतिपाद्य

उत्तराखण्ड की प्रसिद्ध कवयित्री तारा पांडे द्वारा रचित 'सति' कविता का प्रतिपाद्य नारी है। नारी की वेदना तथा नारी आन्दोलन को उन्होंने पौराणिक संदर्भों से जोड़ते हुए दिखाया है। युग चाहे कोई भी रहा हो नारी के गुणों, कार्यशैली, भावनाओं और स्थिती एक समान रही है। एक पुत्री और पत्नि के रूप में आज भी उसकी भावनायें वैसी ही हैं जैसी पौराणिक काल में थी। पिता के घर में कोई भी उत्सव हो बेटी को सर्वप्रथम निमंत्रण दिया जाता है लेकिन जब पिता अपने जामाता (दामाद) के प्रति विद्वेष की भावना रखे तो नारी एक बेटी की तरह नहीं बल्कि एक पत्नि की तरह अपने पति के मान सम्मान को सर्वोपरि रखती है। इस कविता में भी तारा पांडे ने सती के माध्यम से उसके मन में उसके पिता के द्वारा भगवान शंकर के लिए जो क्रोध और कुंठा है → उसे दिखाया गया है। अपने पति के अपमान को सहन न करते हुए दोतरफा क्रोध और क्षोभ से युक्त सती हवन कुण्ड में अपने शरीर को भस्म कर देती है। कोई भी नारी अपने पिता की छवि में अपने पति को देखना चाहती है और उसके पिता सर्वश्रेष्ठ व उसके पति को सर्वोपरि मानती है। पति से भी ऊँचा भी कोई है स्वीकार नहीं कर पाती भगवान शंकर के कथनों को गलत समझकर अपने पिता राजा दक्ष के वहाँ बिना निमंत्रण के चली जाती हैं। और वहाँ पहुँचकर जब सत्य से अवगत होती हैं तो बहुत आहत होती हैं और समझ नहीं पाती की भगवान भोले शंकर का सामना अब वह कैसे करें। और क्रोध और क्षोभ से ग्रसित होकर उसी हवन कुण्ड में सती स्वयं को योगाग्नि में झोंक देती हैं। जब उनकी देह जलने लगती है तो उनके पिता राजा दक्ष को अपनी भूल का अनुभव होता है।

Scanned with CamScanner

पहाड़ आगे पहाड़ भीतर पहाड़ कविता का सारांश —

कवि बलवंत मनराल ने पहाड़ आगे भीतर पहाड़ कविता में पृथक उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन के दौरान हुई हिंसक त्रासदी का वर्णन किया है।

कवि मनराल कहते हैं कि मैं पहाड़ की समस्याओं तथा समस्या के पहाड़ों से ऐसा घिर गया हूँ कि विश्व का मानचित्र ही भूल गया हूँ अर्थात पहाड़ की समस्याओं ने मुझे पूरी तरह उद्वेलित कर दिया है।

कवि लिखते हैं कि ऋषिवत् पहाड़ की कल्याणकारी मूर्ति को उन्होंने जब गोलियों से छिला देखा तो उनका मन आहत हो उठा उनके मन की व्यथा और आक्रोश इस कविता के माध्यम से छलक उठे।

राजनीति स्वार्थ और मानवता के हनन ने पहाड़ों की आत्मा को घायल कर दिया। हिंसक राजनीति खेल ने न्याय के अधिकारी देश निष्ठ पहाड़ को उद्वेष की अग्नि में झोंक दिया न्याय मांगने वालों को मृत्यु से साक्षात्कार करना पड़ा, मानवता अस्मी हुई, स्त्रीत्व का चीर हरण हुआ या स्त्रियों के साथ दुराचार, चारों ओर हिंसा का वातावरण व्याप्त हो गया। माताये अपने बेटों का पत्नियाँ अपने पति का व बच्चे अपने पिता की प्रतीक्षा करते रह गये और वे राजनेताओं की लिप्सा की भेंट चढ़ गये। जिस पहाड़ ने सर्वोच्च सेना के अधिकारी देश को तथा साहित्यकार, वैज्ञानिक प्रशासक, खिलाड़ी, तथा ज्ञान विज्ञान के असंख्य शूरवीर प्रदान किए, उसी पहाड़ के टुकड़े करने तथा अपनी राजनीतिक रोटियों को साधने, जलाने में जरा भी देर नहीं की। कवि कहते हैं कि जो भी देवात्मा पहाड़ के साथ ऐसा हिंसक और शर्मनाक खिलवाड़ करेंगे वे न केवल राष्ट्र का बल्कि इतिहास द्वारा कलंकित व अपमानित होंगे।

कवि पहाड़ के ममतामयी गोद से लगकर सोना चाहते हैं और चाहते हैं कि उनके बाहर भीतर केवल पहाड़ ही हों।

कविता 'पहाड़ आगे भीतर पहाड़' में कवि क्षुब्ध राजनीतिक विसंगतियों के कारण पहाड़ एवं पहाड़ के निवासियों के सामने जीवन में आए संकट को प्रस्तुत करते हुए राजनीति करने वाले लोगों को सावधान किया है।

Date:
Page:

विभाजन के नाम पर नैतिक मूल्यों का जिस प्रकार हनन हुआ और पहाड़ के प्रति समर्पित लोगों का जिस प्रकार हनन हुआ, कत्लेआम हुआ वह अत्यंत हृदय विदारक घटना है। कविता में आक्रोश एवं वेदना का स्वर मुखरित हुआ है। साथ ही कवि की क्रान्तिकारी छवि भी सामने प्रकट हुई है।

यह कविता उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन में शहीद हुए वीर आत्माओं को सच्ची श्रद्धांजली अर्पित करती है।

Scanned with CamScanner

बी० ए० VI sem

PAGE NO :
DATE : / /

प्रश्न-1 अपने-अपने बाद्य कविता के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर : अपने-अपने वाद्य कविता का केन्द्रीय भाव है - प्रेम - वह प्रेम जिसे सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलीति उसे इज्जत पर हमला का नाम दिया जाता है प्रेम के विरोध मे आवास मुखर होती है और प्रेय करने वालो पर अनेक प्रतिबन्ध लगाए जाते प्रेम करने का सामाजिक प्रतिबन्धों और पहरो को तोड़कर वहा से चले जाते है अपने लिए एक नया धरातल तैयार करने के लिए जहां इन तथाकथित वाद्यों के लिए कोई स्थान नही था एक वातावरण निकलकर वह दूसरे वातारवरण मे प्रवेश है वहा भी समस्याओं के मुंह खोले वैठे है की अन्त तक यही चाहता है कि मनुष्य मे प्रेम भाव मनुष्यता वनी रहे यही प्रेम की जीत है एक दुर्घटना वनकर रह गये और एक इन रवबूरो के वीच दोनो को मारए मूक प्रार्थन कर रही थी कि वे दोनो इन्सान वनकर पूरी उम्र साथ-

PAGE NO :

DATE : / /

साथ अपना जीवनयापन करना वे वाद्य में न वहले।
लीलाधर जगूड़ी कृत अपने-अपने कविता में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है कवि का उद्देश्य वर्तमान युग की एक ज्वलन्त समस्या की ओर इंगित करना है आज मानव ज्ञान-विज्ञान की दृष्टि से कितना उन्नत हो गया है आकाश पाताल पर विजय प्राप्त कर ली है लेकिन अपने भीतर की पाशविकता पर नियंत्रण पाने में असफल रहा है प्रतिवर्ष इस तथाकथित सामाजिक प्रतिष्ठा या ऑनर कीलिंग के चलते कितने ही लड़के-लड़कियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है अथवा अपनों से दूर डरी हुई आबादी से घुट घुटकर जीने के लिए विवश होना पड़ता है।
अपने-अपने वाद्य के माध्यम से कवि यह सन्देश देना चाहता है कि हम अपने वाद्यों को नियंत्रण में रखे और एक स्वस्थ समाज की स्थापना आदिम युग की पुनरावृत्ति न

PAGE NO :

DATE : / /

समकालीन कविता के रचनाकर कवि लीलाधर जगूडी कृत अपने अपने वाघ सामाजिक यर्थार्थ को प्रस्तुत करती एक प्रतीकात्मक कविता है जिसमे कवि ने एक छोटी सी खबर को अपनी कविता का आधार बनाया है कविता का सार इस प्रकार है

एक दिन सवेरे सवेरे पूरे गांव में बिजली की तेजी से खबर फैल जाती है कि एक लड़के और एक लड़की को वाघ उठा कर लेगया सत्यता इससे परे थी वे दोनो गांव के भिन्न सामाजिक स्तर और जाति से थे जो परस्पर प्रेम करने लगे थे बढ़ते सामाजिक दवाव ने को गांव से भागने को विवश कर दिया एक दिन वे पहाड़ - नदी को पार करते हुए भाग जाते है किसी प्रकार वह वस पहुचते है फिर रेल का सफर तय करते सामाजिक वर्जनाओं से बहुत दूर निकल जाते है सवेरा होने पर गांव मे यह सूचना फैल गई की दोनो को वाघ उठाकर गया प्रेम को

PAGE NO :
DATE : / /

सामाजिक बाधों ने निगल लिया था गाँव में उन्हें मेरा मान लिया गया था वे दोनों भी आजादी पाने और उसका महसूस करने के लिए संघर्ष कर रहे थे लोगों के लिए यह खबर एक दुर्घटना बनकर रह गई और इस खबरों के बीच दोनों की माएं मूक प्रार्थना कर रही थी कि वे दोनों इन्सान बनकर पूरी उम्र साथ-साथ अपना जीवन यापन करें।

Scanned with CamScanner